ॐ

सङ्घपति शोमजी शाह

—तेजमल बोथरा।

शाह

प्रकाशक—

रावतमल हरखचन्द,
६, क्रॉस स्ट्रीट, कलकत्ता।

श्री श्वेताम्बर जैनसेवा-सङ्घ विद्यालयके सहायतार्थ

मुद्रक—

विश्वमित्र प्रेस, कलकत्ता।

प्रथमावृत्ति १००० | वि० सं० १९९३ | मूल्य -)

❀ दो शब्द ❀

वास्तवमें वच्छल साहमीका स्थान बहुत ही ऊंचा है, किन्तु खेद तो इस बातका है कि हम लोग उसके वास्तविक स्वरूपको भूलसे गये हैं और एकमात्र जीमणवार ही कर, उसमें साधर्म्मी भाइयोंके, भोजनालयके रङ्ग-मञ्चमें धांधल मचा जानेमें ही सच्चे साहमीवच्छलकी इतिश्री मानने लगे हैं। समय और सिद्धान्तके अनुसार तो साहमीवच्छलका आदर्श हमें यह शिक्षा देता है कि हम साधर्म्मी बन्धुओंकी असली तह तक पहुंचें; और उनके दुःखमें हार्दिक समवेदना प्रकट कर, उनके कष्ट निवारणमें प्राणपण-से जुट जांय। प्रस्तुत पुस्तिकाके लिखे जानेका भी यही उद्देश है कि हम संघपति सोमजीके चित्रपट-चरित्रसे साहमीवच्छलका वास्तविक पाठ पढ़ें। मैं भी अपने इस तुच्छ प्रयासको तभी सफल समझूंगा, जब कि समाज इसके असली रहस्यको समझकर इसे हृदयङ्गम करेगी।

प्रस्तुत पुस्तिकाके लिखे जानेका वास्तविक श्रेय तो मेरे श्रद्धेय मित्र इतिहास प्रेमी श्रीमान् अगरचन्दजी व भंवरलालजी नाहटाको ही है जिन्होंने उक्त विषय सम्बन्धी सारी सामग्री देकर मुझ जैसे तुच्छ व्यक्तिको इसके लिखनेके लिए निरन्तर प्रोत्साहित ही नहीं किया है वरन् इसके प्रकाशन आदिमें भी काफी सहायता दी है। इस पुस्तिकाके लेख और प्रूफ आदिको देखकर उसमें उचित संशोधन करनेमें श्रीयुक्त बाबू बेणीमाधव सिंहजी और विशेषकर श्रीयुक्त रघुवीर नारायणजी ओझा, बी० ए० साहित्य व्याकरण तीर्थ, विशारदने अपनी असीम उदारताका जो परिचय दिया है, इसके लिये मैं उनका परम आभारी हूं।

निवेदक—

लेखक।

* श्री सद्गुरुभ्यो नमः *

संघपति

सोमजी साह

शिवा—भैया देखना! ये महात्मा जो माणिक चौकसे आ रहे हैं, सुनता हूं बड़े ही सिद्ध पुरुष हैं। अच्छा हो कि हम लोग भी इनके श्राचरणोंकी सेवा कर अपने दुःख-दारिद्र्य दूर करें।

सोमचन्द—हां भाई, वास्तवमें ये बड़े ही निस्पृह, गुणी और सिद्ध पुरुष हैं। नगरके लोग हजारोंकी संख्यामें प्रतिदिन इनके दर्शनार्थ जाते हैं। दो-तीन दिन हुए, जबसे इनका यहां शुभागमन हुआ है, हमारे स्वजातीय बन्धु इनके उपदेश श्रवणार्थ जाते हैं और मुक्तकण्ठसे इनकी प्रशंसा करते हैं। ठीक तुम्हारे ही जैसे मेरे भी यही भाव हो रहे हैं कि इनके शरणागत हो अपना ऐहिक और पारलौकिक कल्याण करें।

शिवा—तो उठिए अब तो वे निकट ही आ गए

दोनों भाई शीघ्रतापूर्वक अपनी फलोंकी दूकानसे उठे और अपनी शिष्य-मण्डली सहित आते हुए श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी महाराजके सम्मुख पहुंचे। उनके श्रीचरणोंमें गिरकर भक्तिपूर्वक नमस्कार किया और निवेदन करने लगे-"हे गुरुवर्य! हम धन्य हैं जो आज आपके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

सूरिजी—(हाथसे आशीर्वादसूचक संकेत करते हुए) भव्यों ! जगतमें केवल धर्म ही सार है और इसका सेवन ही सारे सुखोंका मूल मन्त्र है।

सोमजी—हे नाथ ! हम अज्ञानी हैं और धर्मका मर्म तो बिलकुल ही नहीं समझते। यद्यपि हमने दसा पोरवाड़ कुलमें जन्म लिया है। तथापि जन्मसे ही उदर-पूर्तिकी चिन्ताके मारे न तो साधु संगति ही की है और न ज्ञानाभ्यास ही। तात्पर्य यह कि हमसे कुछ भी नहीं बन पड़ा है।

सूरिजी—तो क्या हुआ ? अबसे तुम लोग धर्म-तत्त्व समझो और उसकी मर्यादाका पालन करो। तुम्हारे पूर्वज इसी दयामय जैन धर्मके अनुयायी थे और आज भी तुम्हारे स्वजातीय बन्धु सहस्रोंकी संख्यामें (प्रायः सारा पोरवाड़ समाज) इसी वीत-राग मार्गके पथिक हो अपना मानव-जीवन सफल कर रहे हैं। तुम्हें भी अपने ऐहिक और पारलौकिक कल्याण-हेतु ज्ञानोपार्जन करते हुए प्राणातिपात, मृषावाद,विरमण व्रतादि पांचों अणुव्रतों-का पालन करना चाहिये। सामायिकादि षड़ावश्यक, एवं जिन दर्शन पूजन कर, सम्यक् ज्ञानदर्शन चारित्रकी आराधना करते रहना चाहिये। बस, यही परम सुखदायक मूलमन्त्र हैं जिनसे प्राणिमात्रका कल्याण हो सकता है।

दोनों भाइयोंने सूरिजीका वचनामृत पान किया और उसे कल्पवृक्ष तथा चिन्तामणि रत्नसे भी बहुमूल्य समझा। वे अपनेको उस समय महाधन्य मानकर फूले नहीं समाते थे।

सोमजी—प्रभो ! आज हम धन्य हैं, हमारा अहोभाग्य है कि आपके श्रीचरणोंके दर्शन हुए। हम आज ही यह प्रण करते हैं कि आपके अमूल्य उपदेशोंके अनुसार ही चलेंगे।

सूरिजीने उनका भाग्योदय निकट हो जान, उन्हें जिन शासनके भावी उद्योतक समझकर धर्म कार्योंमें विशेष दृढ़ रहनेके उपदेश दिये और उनके एक वस्त्रपर अभिमंत्रित वासक्षेप डाला। वे लोग उसे श्री गुरु महाराजका प्रसाद मान बड़े ही खुश हुए और अपनी हाट (दुकान) में ले जाकर अपनी पूंजी (खरबूजे, कलिन्दे आदि फल) पर रख छोड़ा। कतिपय दिनके पश्चात शाही सेना किसी नगरको लूटकर लौटते समय अहमदाबादसे गुजरी। उन दिनों थी ज्येष्ठ, आषाढ़की गरमी और तिसपर दोपहरकी कड़ाकेकी धूप। थके मांदे सैनिकोंके प्राण मारे भूख-प्यासके निकले जा रहे थे। किसी ऐसी वस्तुके लिये जो उनकी भूख-प्यास बुझाकर हृदय शीतल कर दे, वे बुरी तरह तरस रहे थे।

ठीक उसी समय उन लोगोंकी दृष्टि सोमजीकी दुकानमें पड़े हुए कलिन्दों (तरबूजों) और खरबूजोंपर पड़ी। फिर क्या था, यदि सोनेमें सुगन्ध भी हो तो पूछना ही क्या ? सबके मुंहमें पानी भर आया। सैनिकगण सेठकी हाट (दुकान) पहुंचे और कलिन्दे आदि फलोंका मोल करने लगे। जब सेठने एक एक फलका मूल्य एक स्वर्ण मुद्रा सुनाया, तो एक बार उन्होंने कुछ आनाकानी की, किन्तु ये फल कहीं अन्यत्र न मिलनेपर

(क्योंकि इन दोनों भाइयोंने सारे बाजारके उक्त फल पहलेसे ही संगृहीत कर रखे थे) वे ऐसी मनचाही वस्तु कब छोड़ने लगे ? लूटका माल उनके हाथ लगा था ही। उन्होंने सम्पूर्ण फल खरीद लिये। इस एक ही बारमें सोमजीका सितारा चमक उठा और उनको अगणित लाभ हुआ।

अहा! वास्तवमें पुण्योदय वस्तु ही ऐसी है। इसके उदय होनेपर संसारमें दुर्लभ ही क्या रह जाता है। सब पुण्यकी माया है। पुण्योदयके साथ-ही-साथ इनमें दूरदर्शिता और कार्यदक्षता आदि गुण निवास करने लगे। इनका व्यापार बढ़ा, देश-देशान्तरमें इनका व्यापारिक सम्बन्ध हो गया और इनका धन वैभव भी शुक्ल पक्षके चन्द्रमाकी तरह निरन्तर बढ़ने लगा। इधर ये दोनों भाई धर्म ध्यानकी ओर उत्तरोत्तर प्रवृत्त होते हुए दीन दुःखी और अपने सधर्मी बन्धुओंका अधिक हित करने लगे। वे समाज और विशेषकर धर्मके प्रति अपने कर्त्तव्यका पालन कर जीवन और धनका सदुपयोग करते हुए कालयापन करने लगे। उधर उनकी कीर्त्ति और गुणगाथा भी निरन्तर बढ़ने लगी। सारे अहमदाबाद नगरमें अग्रगण्योंकी गणनामें सर्वप्रथम इन्हींका नाम आने लगा।
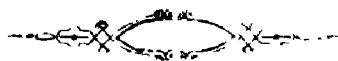
सौराष्ट्र देशकी प्रसिद्ध नगरी वामनस्थलीके मध्य बाजारसे गुजरते हुए मंगलपुरके ठाकुर (जमींदार) श्री अमरसिंहको देखते ही वहांका एक वणिक बड़ी ही आतुरतासे अपनी हाट (दूकान) परसे उठकर खड़ा हो गया और विनम्र अभिवादन करता हुआ अपनी हाटमें पधारनेका अनुरोध करने लगा।

ठाकुर—सेठ ! जरा, सवासेठसे मिल आऊँ।

वणिक—स्वामिन, जरा सुन तो लीजिये। मैं उसी सेठके सम्बन्धमें आपके लाभकी एक-आध बात बताना चाहता हूं।

यह बात कह, वणिकने मधु मक्षिकाको मधुकी तरफ खींचनेका प्रयास किया। सवा सेठके सम्बन्धमें कुछ जाननेको मिलेगा इस लालसासे ठाकुर साहब तुरन्त अपने घोड़से उतर पड़े और वणिककी दूकानमें पदार्पण कर एक उच्चासनपर विराजमान हो गये।

वणिकको अपने स्वागतमें लगते देखकर, ठाकुर साहब कहने लगे—"अभी यह सब करनेका समय नहीं है, आप जल्दी आवें और सवा सेठके बारेमें जो कुछ कहना चाहते थे वह कहें।"

व०—हां, तो आज आपका शुभागमन इधर कैसे हुआ ?

ठा०—जाना तो था माधवपुर, पर जब देखा कि रास्तेमें ही सवा सेठका घर पड़ता है, तो उनके यहां भी हो आऊँ।

व०—अच्छा, सवा सेठके यहां तो आपका कुछ लेना भी है न ?
(मुंहके भावको बदलते हुए वणिकने कहा)

ठा०—क्यों, बात क्या है ?

व०—कुछ नहीं ! मैं तो यों ही पूछता हूं।

ठा०—अरे भाई ! जो हो बताओ तो सही, मेरे तो एक लाख रुपये उनसे लेने हैं।

व०—सच कहूं तो, श्रीमन् ' यह रकम आपकी खतरेमें ही है।

ठा०—यह कैसे ! सवा सेठ जैसा साहूकार और फिर भी खतरा ?

व०—वैसे तो वे मेरे एक प्रेमी सज्जन हैं किन्तु रुपया जो आपका ठहरा, इसीसे कहता हूं—'मंगल इसीमें है कि आप अपनी रकम जल्दी अदा कर लें।' (हाथ जोड़ते हुए) किन्तु कृपया आप कहीं यह बात प्रकट न कर दीजियेगा।

ठा०—पर यह बात कैसी ? सौराष्ट्रका एक प्रधान लक्षाधिपति सेठ, जिसके पास लाखों रुपये नक़द, लाखोंकी जायदाद और उसीके सम्बन्धमें आप अकस्मात् यह कह रहे हैं !

व०—श्रीमन् , वह राईके भाव रात ही लद गये, आज तो आप जाकर मांगिये, तो सवा सेठके पास सवा लाख कौड़ियां भी मिलें, तो ईश्वरकी कृपा ही समझिये।

ठा०—कह क्या रहे हो तुम ?

व०—जो कुछ कह रहा हूं सच कह रहा हूं, आज ही रकम अदायगीकी कोई तजवीज़ कर लें, नहीं तो फिर......(वणिकने अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा)

ठा०—कुछ बताओ तो सही, यह सब अचानक ही हुआ क्या ?

व०—आपको तो बताना ही पड़ेगा, पर यह ध्यान रखियेगा कि कहीं मैं गरीब न मारा जाऊँ। बात यह है कि उनके जावासे आते हुए जहाज तूफानमें पड़ गये, प्रायः दो माससे उनका कोई पता नहीं है। अब कहिये यदि वे डूब जायं, जिनके मिलनेकी कोई आशा नहीं है तो सवा सेठके पास बच ही क्या जायगा।

ठा०—भारी हुई! (जोरसे निश्वास छोड़ते हुए ठाकुर साहबने कहा)

व०—भारी कि हल्की, आप अपने हाथ सफा (रुपयोंकी प्राप्ति) का उपाय निकालिये, नहीं तो बस................

वणिक अपनी मूछोंमें इस प्रकार मन्द-मन्द मुसकराने लगा, मानों सवा सेठके विपत्तिकालमें उसे आनन्द आ रहा था।

ठाकुर साहबके होश-हवाश तो उड़ ही चुके थे, फिर कैसे सम्भव था कि वे इस ईर्ष्यालु वणिकके हास्यका अनुमान करते। वे वहांसे घबराये हुए उठे और मनमें वणिकका आभार मानते हुए सवा सेठके घरकी ओर चल पड़े।

सवा सेठकी संकटापन्न अवस्थामें खुश होनेवाला ईर्ष्यालु वणिक मन ही मन आनन्दित होकर, जाते हुए ठाकुर साहबके पीछे, हर्षसे टकटकी लगाये रहा।

ठा०—सेठ! जय रघुनाथजी की।

से०—अहा! दरबार, पधारिये, पधारिये। आप किधरसे? (ठाकुर साहबको उच्चासनपर बैठाते हुए सवासेठने पूछा)

ठा०—आप ही के यहां तो।

से०—कहिये, मेरे योग्य सेवा।

ठा०—कोई खास बात तो नहीं है किन्तु नखत सिंह अब सयाना हो गया है और उसको यह सनक चढ़ी है कि नक़द रोकड़ जितनी भी है वह सब संग्रह करे। सो आपके यहांसे अपने एक लाख रुपये लेने आया हूं।

से०—कुमारश्री का यह विचार अत्युत्तम है, मुझे तो इसमें बड़ी खुशी हो रही है कि आप अपनी रकम संभाल लें।

ठा०—मेरे लिये तो यह कोई बात ही नहीं है, चाहे आपके यहां रहे या मेरे यहां, किन्तु देखता हूं कि नखत सिंह योग्य लड़का है और यदि वह इन सब झंझटोंको संभाल ले तो अपने राम निहाल हो जायं, बस इसीलिये आया हूं, बाकी कुछ नहीं।

से०—बड़ा ही अच्छा किया श्रीमान्ने। आप अपना रुपया ले जाइये। हुण्डी दे दूं तो चलेगी न?

ठा०—हां, हां, नहीं क्यों चलेगी?

(वे तो इसके लिये आतुर हो ही रहे थे कि किसी प्रकार उनकी रकम हाथ लगे। इसलिये बिना कुछ आनाकानी किये ही उन्होंने हुण्डी लेना स्वीकार कर लिया।)

"अच्छा, तो मैं हुण्डी अभी लिख देता हूं।" यह कह सेठ वहांसे उठे, और अपनी पेढ़ी (गद्दी) में जाकर सोचने लगे कि क्या किया जाय? हुण्डी किसपर लिखी जाय। मेरा लेना तो किसीके पास कुछ है ही नहीं, फिर क्या करूं? उन्हें जबान भी दे चुका हूं। कुछ बुद्धि काम नहीं करती। सुनता हूं गुम हुए

जहाज सही सलामत हैं, यदि वे ठीक पहुंच जांय तब तो एक नहीं दस लाख दे सकता हूं, पर अभी तो मेरे पास............ इत्यादि बातोंपर सेठ अपने गालपर हाथ धरे कि कर्तव्य विमूढ़ हो रहे थे। उस समय उनकी विचित्र दशा हो रही थी। अकस्मात् उन्हें अहमदाबादके बड़े धनाढ्य, देश विदेशमें विख्यात व्यापारी सेठ सोमचन्द भाईकी याद आई। मनमें विचार हुआ कि हुण्डी उन्हींपर लिख दूं किन्तु उनके यहां न तो मेरा कोई लेन-देन है, न उनसे व्यापारिक सम्बन्ध है, यहां तक कि किंचित् परिचय भी नहीं है। फिर वे हुण्डी स्वीकार ही कैसे कर सकते हैं। पर हां! एक बात जरूर है, उनके हुण्डो न स्वीकार करनेपर, जब ठाकुर साहब यहां वापस लौटेंगे तब तक आशा है जहाज भी पहुंच जायंगे। ऐसा निश्चय कर सेठ जीने कलम तो उठा ही ली थी, पर यह कपटपूर्ण व्यवहार, खोटी हुण्डी लिखते हुए उनके हाथ नहीं चलते थे, हृदय मार्मिक वेदनासे दबा जाता था, चक्षु यह देख न सकनेके कारण अधीर हो उठे और उन अक्षरोंको धो डालने का निश्चय कर सेठके भरसक रोकनेपर भी आंसुओंकी दो तीन बूंदें तो हुण्डीपर डाल ही दीं। सेठने अपने हृदयको पत्थर बना, इन सब रोक टोकको तनिक भी परवाह न कर, आखिर हुण्डी लिख ही दी। सेठ मुंह आंख धो, कुछ स्वस्थ हो अपनी दूकानमें आये, और यह कहते हुए ठाकुर अगर सिंहके हाथमें हुण्डी दे दी "लीजिये सरकार! यह अहमदाबादके ऊपरकी

लाख रुपयोंकी हुण्डी। उस नगरमें सोमचन्द सेठ एक बहुत ही धनीमानी और प्रख्यात व्यक्ति हैं। आप एक छोटे बच्चेसे भी पूछेंगे तो सेठ साहबकी पेढ़ी बता देगा।"

ठाकुर साहबने हुण्डी अपने हाथमें ली और उसे भली-भांति देखभाल, सेठसे "रामराम" करते हुए अपने घरका रास्ता लिया। मंगलपुरसे अहमदाबादका रास्ता प्रायः सोलह दिनका था। अतः ठाकुर साहबने घर आकर अपनी घोड़ी तैयार की और यात्राके निमित्त आवश्यक वस्तुयें साथ लेकर अहमदाबादकी ओर प्रस्थान कर दिया।

ठाकुर अगरसिंह कहीं ठहरते, कहीं विश्राम लेते हुए ठीक सोलहवें दिनके प्रातःकाल ही अहमदाबादके मध्य बाजारमें पहुंचे। इस समय बहुत दूर चलकर आनेवाले थके मांदे ठाकुर साहबने किसी एक राहगीरको पुकारकर ठहराया और पूछा—

"भाई! यहां सोमचन्द सेठकी पेढ़ी (गद्दी) कौन-सी है?"

"सोमचन्द सेठकी पेढ़ी! यों तो प्रायः अहमदाबादके सभी बाजारोंमें मिलेगी, पर देखो, वह जो सामने विशाल प्रासाद नज़र आ रहा है वही उनकी मुख्य पेढ़ी है। नीचे पेढ़ी है और ऊपर सेठजी विराजते हैं।" अगरसिंहने बिना कुछ विशेष बातचीत किये ही घोड़ीको एक एंड़ लगाई।

—"क्यों भाई! सोमचन्द सेठकी पेढ़ी यही है न?"

"कहिए! कहांसे आ रहे हैं?"

(वहां घूमते हुए एक गुमाश्तेने पूछा)

—"मैं सौराष्ट्रसे आ रहा हूं और सेठ साहबसे कुछ काम है।" गुमाश्तेने तुरन्त यह खबर मुनीमको दी। मुनीम सुनते ही बाहर आये और ठाकुर साहबकी घोड़ी अपने एक नौकरको सौंपते हुए, उन्हें बड़े सम्मानके साथ पेढ़ीमें ले गये।

"कहिए; आपका शुभागमन कहांसे और कैसे हुआ ?" सम्मानपूर्वक बैठाते हुए मुनीमने उनसे पूछा।

"मैं सौराष्ट्रके अन्तर्गत मंगलपुरसे आ रहा हूं। सेठ साहबके नाम एक हुण्डी है" हुण्डी दिखाते हुए अमर सिंहने कहा।

"बहुत अच्छी बात है। आप विश्राम करें, मैं अभी इसकी व्यवस्था करता हूं।" यह कह उन्होंने उनके आतिथ्य सत्कार-का पूर्ण प्रबन्ध किया, फिर हुण्डी लेकर सवा सेठका खाता संभालना प्रारम्भ किया, किन्तु चालू खातेमें कहीं उनका नामो-निशान न पाया। कहीं भूल न हो गई हो यह समझ उन्होंने दुबारा जांचा पर कहीं पता न लगा। कहीं गत वर्षसे खाता टान के लानेमें गलती न रह गई हो इसलिये उन्होंने गत वर्षका खाता भी संभाला, उसमें भी कहीं सवासेठका नाम नहीं पाया। इसी तरह गत पांच वर्षके खाते सोध डाले पर कहीं भी सवासेठका नाम उन्हें मिला ही नहीं। लाख रुपयोंकी हुण्डी और लिखनेवालेका खातेमें कहीं नाम भी न मिले इस बातने मुनीमके मनमें बड़ा ही आश्चर्य पैदा कर दिया।

"मुनीमजी ! क्या बात है जो आपको इतने खाते संभालने पड़ते हैं ?" शंका भरी दृष्टिसे ठाकुर साहबने पूछा।"

—"हमारे यहां तो सारे हिन्दुस्तानका लेन-देन ठहरा। इसलिये ढूंढनेमें कुछ समय लगता ही है और बात कुछ भी नहीं है। अच्छा, जरा बैठिये, मैं अभी आता हूं" यह कहते हुए मुनीम वहांसे उठे और सेठके पास जाकर उनसे सारा हाल कह सुनाया। सेठको भी बड़ा अचम्भा हुआ, मनमें सोचा कि एक लाख रुपयेकी हुण्डी खोटी हो, यह कैसे हो सकता है। "अच्छा; हुण्डी तो देखूं!" यह कहकर सेठने हुण्डी हाथमें ले ली।

"मैं यह हुण्डी देख रहा हूं, तुम जाओ फिरसे एक बार सावधानता पूर्वक जांच करो।" सेठ कुछ प्रकाशकी ओर जा, ध्यानसे हुण्डी पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते सेठ चौंक उठे, क्षण-भरके लिये स्तम्भित रहे, फिर मन ही मन कहने लगे—बेशक किसी खानदानी साधर्मी भाईने विपत्तिमें पड़कर यह हुण्डी लिखी है। हुण्डी लिखते समय मार्मिक दुःखके कारण अक्षरोंपर अश्रु पड़े हुए हैं यह बात सेठ अच्छी तरह समझ गये। सेठ अपनी विचक्षण बुद्धिसे यह भी भलीभांति समझ गये कि हुण्डीका लिखनेवाला कोई सच्चा एवं आदरणीय व्यक्ति है और किसी विपत्तिमें पड़ उसने ऐसा किया है। सेठ हुण्डीको ध्यानपूर्वक देखते और आंसुओंपर विचार कर ही रहे थे कि इतनेमें मुनीम वापस लौट आये।

से०—क्यों! कुछ पता लगा?

मु०—नहीं साहब। उनका तो अपने यहां कोई नामोनिशान भी नहीं है।

से०—अच्छा! तो ऐसा करो—यह रकम मेरे निजी खातेमें लिख-कर हुण्डीका भुगतान कर दो।

मुनीम कुछ सहमे और सेठकी ओर देखने लगे।

से०—क्यों किस विचारमें पड़ गये? जाओ और जिस प्रकारका सिक्का वे चाहें उन्हें भुगतान कर दो।

मुनीम विचारेके मनमें सेठजीका यह पागलपन खटका तो सही, पर आख़िर मालिककी आज्ञा ही ठहरी।

× × × ×

मंगरोलके किनारे वहाण (जहाज) सुरक्षित रूपसे पहुंचे हैं, यह खबर सवासेठको मिलते ही सबसे पहले उन्हें ठाकुर अगर सिंहको दी हुई खोटी हुण्डीका ख़याल आया। अगर सिंह अहमदाबाद जाकर वापस लौटें तो अब एक दो दिनमें उन्हें यहां पहुंच जाना चाहिये यह हिसाब लगाते हुए सेठ हर घड़ी अपने मकानमें झरोखेपर बैठे हुए सदर रास्तेकी तरफ नज़र रखकर अगर सिंहकी प्रतीक्षा करने लगे। आज सवा सेठ अपने पूजा-पाठसे निवृत्त हो, झरोखेमें आये ही थे कि नीचेसे आवाज़ आयी—"सेठ हैं क्या?" सेठ अगर सिंहकी आवाज पहचान बड़ी तेजीसे नीचे उतरे। वे इस बातको भली भांति जानते थे कि यदि दी हुई हुण्डीका भुगतान न हो तो लेनदारको कितना क्रोध आ सकता है और उस क्रोधके आवेशमें आ वह क्या-क्या न बक जा सकता है। इसलिये सेठ अगर सिंहको एक शब्द भी उच्चारण करनेका

मौका दिये बिना ही, फौरन् उनका हाथ पकड़ उन्हें अन्दर ले आये।

अगरसिंह सेठके साथ ऊपर आए और आसन ग्रहण करनेके पूर्व ही कहने लगे "सवाचन्द सेठ! अहमदाबादका सोमचन्द सेठ तो भई पक्का सेठ ही है।"

सेठ—कैसे ? (कुछ आतुरता और घबराहटके साथ उनकी ओर देखते हुए सवासेठने पूछा।)

ठा०—कैसे क्या, वास्तवमें उनकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। हुण्डी का भुगतान दे इसमें तो बात ही क्या! पर उन्होंने मुझे सात दिनों तक रखकर मेरा जैसा आतिथ्य सत्कार किया है, मैं तो उसे जन्म भर नहीं भूलने का। उनके धन वैभवका तो मानों कोई ठिकाना ही नहीं, उनकी उदारताकी तो बात ही जाने दो, सारे नगरमें उन्हीं की ख्याति, यश और प्रशंसा की धूम है।

अगरसिंह सच सच कह रहे हैं या मज़ाक कर रहे हैं इस रहस्यको सेठ कुछ समयके लिए समझ न सके।

"खैर ; आपके रुपये आपको मिल गये तो ?"

"हां, हां, केवल मिल ही नहीं गये, यह सब रकम फिर तखतसिंह आप ही को सौंपेगा और आपको संभालनी भी पड़ेगी।"

अब सवासेठको निश्चय हो गया कि हुण्डीका भुगतान इन्हें मिल गया है। सेठके आश्चर्य्यका ठिकाना न रहा, हृदय

गद्गद् हो उठा, सोमचन्द सेठके प्रति इनके हृदयमें असाधारण सम्मान उत्पन्न हो गया और उनका बदला कैसे चुकाया जाय, मस्तिष्कमें केवल यही विचार दौड़ने लगे। सेठने निश्चय किया कि एक यात्रा संघ निकाला जाय। फलतः एक शुभ मुहूर्त्त देखकर सेठ एक विशाल संघके साथ यात्राको निकल पड़े। श्री शत्रुञ्जयकी यात्राकर अन्यान्य तीर्थोंके यात्रार्थ संघने अहमदाबादकी ओर प्रस्थान किया। वास्तवमें तो सवासेठका ध्येय सोमचन्द सेठको अहमदाबाद जा, हुण्डीका दुगुना धन दे, उनके उपकारसे उऋण होनेका ही था।

श्रीशत्रुञ्जयकी यात्राकर वामनस्थलीके सवासेठ अन्यान्य तीर्थोंको जाते हुए एक विशाल संघके साथ अहमदाबाद आ रहे हैं, यह खबर जब सोमचन्द सेठको मिली तो उन्होंने यात्री संघका समुचित सम्मान करनेकी तैयारी की। नगरके सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियोंको बुलवाया,—जिससे यात्री संघका अच्छा स्वागत हो, ऐसी व्यवस्था की और उनके ठहरनेके लिये एक विशाल भवनका प्रबन्ध किया।

यात्री संघ निश्चित दिन और निर्धारित समय पर अहमदाबाद पहुंचा। वहांके सारे संघके साथ सोमचन्द सेठने बड़े ही समारोहसे उनकी अगवानी की।

महान् विपत्तिकालमें अपने सम्मान की रक्षा करनेवाले इस सत्कुलोत्पन्न सेठको देखकर, सवासेठके नेत्रद्वय आभार और हर्षके अश्रुजलसे भर गये। यात्री संघका जुलूस एक बड़े

रास्तेमें होता हुआ निश्चित स्थान पर पहुंचा। सवासेठ—सोमचन्द सेठके प्रासाद पहुंच कर दो बैल गाड़ियोंमें रक्खी हुई थैलियोंको उतरवाते हुए सोमचन्द सेठसे कहने लगे "भाई साहब! आपसे मुझे एकान्तमें दो एक बातें करनी है।"

"आज्ञा"

"हां; निवेदन यह है कि आपने मुझ किंकरकी संकटके समय एक लाख रुपयोंकी हुण्डी स्वीकार कर, अपनी जिस असीम उदारताका परिचय दियाहै और आपने मेरी जो लज्जा रखी है—निश्चय है कि मैं उस उपकारसे उऋण होनेमें सर्वथा असमर्थ हूं, फिर भी मेरे मनको संतोष देनेके लिये इस दो लाख रुपयोंकी रकमको स्वीकार कर मुझे कृतार्थ कीजिये।"

"कौन सा एक लाख रुपया?"

"आपने जो मेरी हुण्डी स्वीकार की है, वही।"

"नहीं, मेरे खातेमें तो कहीं, आपके पास कुछ भी लेना नहीं है।"

"नहीं साहब, यह नहीं हो सकता, आप ये सब बातें कैसी कर रहे हैं?"

"तो क्या आपके यहां मेरा लेना न होने पर भी, जबरन ले लूं?"

इस प्रकार दोनोंके बीच रकझक चलने लगी—एक कहता है "मुझे आपका देना है", जब कि दूसरा कहता है "मेरा कुछ लेना ही नहीं है।" आखिरकार दोनोंमें यह समझौता न होते

देख, इस निपटारेका भार अहमदाबादके संघ पर छोड़ा। संघ-ने दोनों ही व्यक्तियोंको अपने अपने पथपर दृढ़ देख, यही उचित समझा कि यह सारा द्रव्य किसी जिनालयकी स्थापना-में लगाकर इन धर्म प्रेमी दिव्यात्माओंका नाम अमर कर दिया जाय। तदनुसार होजा पटेलकी पोलमें श्री शान्तिनाथ प्रभु-का एक बड़ा ही मनोहर जिनालय, उक्त एवं और भी आवश्यक द्रव्य लगाकर निर्माण कराया, जो आज भी उनके नामसे प्रसिद्ध है, और उनकी मधुर स्मृति कराकर महान् सधर्म्मी वात्सल्यका परिचय देता है।

* * *

अहा! धन्य है इनका सफल जीवन और धन्य है इनका स्वधर्मानुराग !!

ॐ

श्रेष्ठिवर्य्य सोमजीका विशेष परिचय !

हमारे चरित्र नायक सोमजी, धर्म परायण, जैन इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें लिखे जाने योग्य मंत्रीश्वर वस्तुपालके वंशज थे।* आपके पितामह साईदास और पिता श्री जोगानाथके नामसे ख्यात थे—जो कि एक बड़े ही भव्य पुरुष हो गये हैं। आपकी मातुश्री का नाम जसमा देवी था। आपके शिवा नामके एक छोटे भाई और थे। आप दोनों भ्राताओंको प्रातःस्मरणीय अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी महाराजकी कृपासे ही तत्वज्ञानकी प्राप्ति और अपार धन सम्पदा मिली थी। दोनों ही भ्राता श्री गुरु महाराजके परमभक्त थे। सं० १६४४ वि० का चातुर्मास श्री गुरुमहाराज ने खम्भातमें व्यतीत कर वहांसे शाह-जोगीनाथ और सोमजीके विशेष आग्रहपर अहमदाबाद पधारनेकी कृपाकी। सोमजी ने श्री गुरुमहाराज के साथ तीर्थाधिराज श्री शत्रुञ्जयके यात्रार्थ एक विशाल सङ्घ निकालनेका निश्चय किया। और सम्पूर्ण देशके श्रावकों को सङ्घ में सम्मिलित हो तीर्थाधिराजकी यात्राका लाभ उठानेके लिये सानुरोध आमन्त्रित किया। फलतः

* (क) अपनी तीर्थमालामें शीलविजयजी लिखते हैं :—

वस्तुपाल मन्त्रीश्वरवंश, शिवासोमजी कुल-अवतंस।
शत्रुञ्जयउपरि चौमुख कियउ, मानव भव लाहो तिण लीयउ॥

खम्भात, सोरठ (सौराष्ट्र) सिरोही, बीकानेर, जेसलमेर, चाम्पानेर, जालोर और सिन्ध आदि नगरोंके सङ्घ भी आआ कर सम्मिलित हुए। *सङ्घकी सेवा सुश्रूषा †। लाभ लेते हुए सोमजी ने उस विशाल सङ्घके साथ सानन्द तीर्थाधिराजकी यात्राका लाभ उठाया। सङ्घने भी सर्व प्रकारेण सोमजीको योग्य समझ उन्हें सङ्घाधिपतिके पदसे विभूषित किया। और भी आपने गिरनार, आबू, राणपुर आदि अनेक तीर्थोंके यात्रार्थ बड़े बड़े सङ्घ निकाल कर यात्राएं की और प्रत्येक स्थानपर लाहणें आदि सत्कार्यों में लाखों रुपयों का सद्व्यय किया। आपने अहमदाबाद नगरमें तीन विशाल जिनालय, एक सं० १६५३ वि० में सूरिजी महाराजके करकमलों द्वारा प्रतिष्ठित† श्री आदिनाथ प्रभुका और दो श्री शान्तिनाथ प्रभुके क्रमशः धनासुनार की पोल (सवा सोमकी पोल) झवेरी वाड़ा चौमुखजीकी पोल और हाजा पटेलकी पोलमें निर्माण करवाये। इतना ही नहीं तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचलपर बहत्तर (७२) जिनालयकी टूंक (जो कि खरतर वसही व सवासोमकी टूंक नामसे

* गुणविनयकृत शत्रुञ्जय चैत्य परिपाटी स्तवनमें लिखा है—

(क) जब सोमजी सङ्घके साथ सेरिसा लोडन पार्श्वनाथ आये तब बीकानेरका यात्री सङ्घ आकर मिला।

† इस प्रतिष्ठाके समय एवं उपरोक्त शत्रुञ्जय सङ्घ सह यात्रामें क्रमशः ३६०००, ३६००० रुपया व्यय होनेका उल्लेख एक पट्टावलीमें है। देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २४१

प्रसिद्ध है) ५८ लाख रुपये खर्चकर बनवायीं‡ जिसका परिचय उक्त टूंकोंके दर्शन मात्रसे ही हो जाता है। इसी तरह आपने और भी खम्भात आदि कई स्थानोंमें नये जिन भवनोंके निर्माण, जीर्णोद्धार आदि सत्कार्य्य कर पुण्योपार्जन किया। और अनेकों ग्रन्थ लिखवाकर÷ ज्ञान, भक्तिका भी अच्छा लाभ लिया। स्वधर्म्य वात्सल्य तो आपमें मानों कूट-कूटकर भरा हुआ था। जिसका परिचय उपयुक्त कथानक में हो ही जाता है। दीन-दुःखियोंपर दया करना तो आपका व्रत ही था। तात्पर्य यह कि आपने जिन शासनकी सेवा करने और अपने क्षणभङ्गुर जीवनको सार्थक बनानेमें कुछ उठा नहीं रखा। चपला (चञ्चला) लक्ष्मीके वास्तविक स्वरूपको समझकर आपने जीवन में करोड़ों रुपयों का सद्व्यय किया।

अहमदाबादका जैन समाज आपको किस उच्च दृष्टिसे देखता था इसका अनुमान सुविज्ञ पाठक स्वयं ही लगा लें कि आज भी अहमदाबादके (दस्सा पोरवाड जातिके) विवाह पत्रके लेखमें लेनदेनकी

‡ मीरातें अहमदीमें भी लिखा है कि उक्त टूंकें बनवानेमें ५८ लाख रुपये खर्च हुए जिसमें ८४ हजारकी तो केवल रस्सियां ही लग गईं। मन्दिर की विशालता और सुन्दरता देखनेसे इसमें किसी प्रकारका सन्देह ज्ञात नहीं होता। (प्राचीन जैन लेख संग्रह भा० २)

÷ जिनमेंसे १ प्रति सं० १६०२ लि० (रायपसेणी सूत्र) गुलाब कुमारी लायब्रेरीमें उपलब्ध है।

मर्यादा "शिवासोम जीकी रीति प्रमाणे" लिखी जाती है। केवल इतना ही नहीं वरन् धनासुनारकी पोलमें जब कभी कोई जीमनवार होती है तो निमन्त्रण भी आप ही के नामसे दिया जाता है। विशेष इस तुच्छ लेखनीकी शक्तिके बाहर है कि ऐसे पुरुष सिंहकी महत्ताका यथोचित दिग्दर्शन करा सके। आपकी सुमहती कृतियां ही आपकी धर्मपरायणता, उदारता और महत्ताका परिचय दे रही हैं और चिरकाल तक देती रहेंगी।*

॥ शुभम् ॥

तुलसी या संसारमें, पांच वस्तु हैं सार।
संत मिलन, भगवन-भजन, दया, धर्म उपकार॥

* इनका ऐतिहासिक विशेष परिचय जाननेके लिये युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थ देखना चाहिये।